PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Philosophy

Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

युवा वर्ग के नैतिक विकास में स्वामी विवेकानन्द के दर्शन का योगदान

• Shyam Priya • Aradhana Singh • Preeti Singh
• Kumkum Rani

Received : November 2013
Accepted : March 2014
Corresponding Author : Kumkum Rani

Abstract : आज देश में युवाओं की भागीदारी को लेकर बहस छिड़ी हुई है कि हम उन्हें किस तरह विकास की राह में अपना सारथी बना पाएंगे। इस सवाल का जबाब है कि युवा अपना आदर्श ऐसे लोगों को बनाएं जो वाकई जमीनी स्तर पर युवाओं के लिए कर्त्तव्यबद्ध होते हैं। ऐसे ही एक अहम आदर्श हैं- स्वामी विवेकानन्द। स्वामीजी ने अपनी ओजपूर्ण वाणी से सभी को उत्साहित किया मगर युवाओं को उन्होनें ज्यादा प्रोत्साहित किया, क्योंकि उनका मानना था कि-युवा ही हमारा भविष्य है। इसलिए स्वामीजी के जन्मदिन को हम प्रत्येक वर्ष ''युवा दिवस'' के रूप में मनाते हैं। स्वामीजी ने अपने दर्शन में सदैव युवा वर्ग के नैतिक विकास पर बल दिया। परन्तु आज के दौर में कुछ अपवाद को छोड़कर हमारी संपूर्ण युवा पीढ़ी पूरी तरह से भौतिकता में लिप्त हो चुकी है। उनमें जीवन के नैतिक और धार्मिक मूल्यों का अभाव दिखता है जिससे वे अपने सभ्यता और संस्कृति से विमुख होते जा रहे हैं। स्वामीजी कहते थे कि उन्नति और प्रगति के लिए अतीत की नींव से जुड़ा होना चाहिए अन्यथा सुदृढ़ भविष्य का निर्माण नहीं हो सकता। इस शोध कार्य में हमने विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों की व्याख्या की है। उनकी इच्छा ऐसे आध्यात्मिक धर्म की स्थापना करना था जो प्रचलित संप्रदायगत धर्मों और सैद्धांतिक वाद-विवादों से ऊपर हो जो मानव समाज को महापुरूषों के निकट ले जाए। वे कहते थे कि प्रत्येक धर्मावलंबियों को धर्म परिवर्तन की शिक्षा न देकर उन्हें लोगों को बेहतर इन्सान बनाने का प्रयास करना चाहिए। इस विषय की व्याख्या करने के लिए हमने तीन तरह की विधियों का भी प्रयोग किया है- वर्णनात्मक विधि, विश्लेणात्मक एवं संश्लेष्णात्मक विधि। इसके अतिरिक्त हमने अपने शोध कार्य में वर्तमान युवा वर्ग के विचारों का भी अध्ययन किया और यह पाया कि युवा पीढ़ी मानवता को आदर्श न मानकर केवल पैसा, पदप्रतिष्ठा ऐश्वर्य को अपने जीवन का आदर्श मानती है। निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि विवेकानंद के विचारानुसार प्रत्येक देश का भविष्य निश्चित रूप से वहाँ की युवा पीढ़ी पर आधारित होता है। अतः जो राष्ट्र अपनी युवाशक्ति का बेहतर और नैतिक इस्तेमाल करेगा वह आगे बढ़ेगा और जो ऐसा नही करेगा, वह अपनी अच्छाईयों विशिष्टताओं के बावजूद उस दौर में पीछे रह जाता है। अतः यह जरूरी है कि हम युवाओं को उचित मार्गदर्शन प्रदान करें जिससे कि उनमें नैतिक मूल्यों का विकास हो क्योंकि आदर्श नेतृत्व ही युवाओं को सही दिशा दिखा सकता है।

Keywords: नैतिकता, कर्त्तव्यबद्धता, संप्रदायगतधर्म, धर्मावलंबी, सुसंस्कृत समाज।

Shyam Priya
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Aradhana Singh
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Preeti Singh
B.A. III year, Philosophy (Hons.), Session: 2011-2014,
Patna Women's College, Patna University, Patna,
Bihar, India

Kumkum Rani
Asst. Professor, Department of Philosophy,
Patna Women's College, Bailey Road,
Patna – 800 001, Bihar, India
E-mail : drkumkumranipatna@gmail.com